वाणी भूषण परम श्रद्धेय श्री मयाराम जी महाराज

वक्तुं गुणान गुण समुद्र शशांक कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर गुरू प्रतिमोऽपिबुद्ध्या।।

हे गुण सागर चन्द्रमा के समान कमनीय आपके गुणों का वर्णन बृहस्पति के समान बुद्धि-वैभव सम्पन्न व्यक्ति भी नहीं कर सकता, फिर मुझ में तो इतना सामर्थ्य ही नहीं है।

जैन साहित्य इतना विशाल है कि इस की तुलना नहीं की जा सकती। पहले तो यह श्रुतज्ञान होता था, फिर जब श्रुतेन्द्रिय क्षीण होने लगी तो हमारे पूर्व आचार्य भगवन्तों ने इसे लिपीबद्ध किया और लम्बा समय होने के कारण हस्तलिखित भी अधिक सुरक्षित नहीं रहे। ऐसे अनेकों मुनिषियों का जीवन परिचय हमें नहीं मिलता । इसी तरह महान तपस्वी वचनसिद्ध पुरुष श्री मयाराम जी महाराज का जीवन परिचय भी अनउपल्बध है ।

विभाजन से पहले पंजाब एक बहुत बड़ा प्रान्त था। यह दिल्ली से लेकर पेशावर तक फैला हुआ था। इस प्रान्त में जैन समाज एक प्रतिष्ठित समाज समझी जाती थी। इतिहास साक्षी है कि जैन धर्म बड़ी दूर-दूर तक

फैला हुआ था । जब चीन के ह्यूनसांग और फाहियान भारत भ्रमण करने आए तो वह लिखते हैं कि वह चीन से भारत अफगानिस्तान-ईरान के रास्ते पेशावर भारत में प्रवेश किया और रास्ते में अफगानिस्तान और ईरान में हजारों की संख्या में जैन और बोद्ध भिक्षु देखे। महाराज श्रेणिक के दस बेटों का राज्य पेशावर, कश्मीर इत्यादि तक फैला हुआ था। अफगानिस्तान में तो जैन मन्दिर भी थे, अनुमानतः उस समय दिगम्बर परम्परा का ही बाहुल्य था परन्तु कोई प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे पास नहीं है। पंजाब में स्थानकवासी परम्परा का आगमन लगभग 400 वर्ष पूर्व ई. सन् 1730 के लगभग ही है, क्यों कि लौंकेशाह लाहौर में यति थे उन्हों ने गुजरात में जाकर लव जी ऋषि और सोमजी ऋषि जी से मुनित्व स्वीकार किया और फिर पंजाब में हरिदास जी लाहौरी के नाम से विख्यात हुए। उनकी व्यवस्था में आगे चलकर श्री वृन्दालाल जी महाराज, फिर श्री भवानी दास जी के पश्चात श्री मलूकचन्द जी ने धर्म को गतिमान किया। श्री महासिंह जी महाराज ने उसे अक्षुण्य रखा। श्री कुशलचन्द जी और श्री छजमल्ल जी के समय उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं हुआ । महासाध्वी श्री ज्ञानों जी महाराज ने बालक रामलाल के मस्तिष्क को अपनी

पारखी नेत्रों से देखा कि यह बालक होनहार विद्वान धर्म प्रभावना करेगा और उसके पिता से कहा- यह बालक मुझे दे दो, जो उसने स्वीकार कर रामलाल को सौंप दिया और महासती श्री ज्ञानो जी ने रामलाल को दीक्षा पाठ पढ़ाकर मुनि रामलाल जी महाराज श्री छजमल जी का शिष्य घोषित किया और परम्परा को जीवित रखा। जिनके शिष्य हुए आचार्य़ श्री अमरसिंह जी महाराज । उस समय मारवाड़ी सन्त श्री नाथुराम जी महाराज के शिष्य परिशिष्य आचार्य श्री रतीराम जी एव श्री गंगाराम जी का बड़ा परिवार पूरे पंजाब में विचरण कर रहा था कि पंजाव में रियास्त जींद के पास एक छोटा सा गांव बड़ोदा (रियास्त पटियाला) जिसमें अधिकतर जाट रहते थे और खेती ही व्यवसाय थी परन्तु परतन्त्र भारत में सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं थी केवल वर्षा ऋतु पर आधारित होने के कारण अधिक खुशहाली नहीं थी। वहाँ के नम्बरदार चौधरी श्री जोतराम जी के घर पुत्ररत्न ने जन्म लिया अषाढ़ वदी दूज सम्वत् 1911 (12 जून 1854) प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 से तीन वर्ष पूर्व भारत देश में राजनीतिक व्यवस्था चरमराई हुई थी। बड़ौदा में जैन धर्म केवल बनिया परिवारों में ही मान्य था । आर्य समाज भी उन दिनों गतिमान थी । वहां

आचार्य श्री रतीराम जी और श्री गंगा राम जी महाराज का पधारपन हुआ। यह सन्त पंजाब सम्प्रदाय से भिन्न थे। यह दो सन्त चमत्कारी कहलाते थे। यह प्रायः लोगों का दुःख-दर्द सुन लिया करते थे,और उनको कुछ उपाय के रुप में मन्त्र-माला आदि बतला देते थे, जिससे जनता का इनके प्रति लगाव हो गया। पंजाब जैन साधु समाज से इनका आहार-विहार नहीं होता था। एक दिन यह दो सन्त गाँव में ही कहीं जा रहे थे कि कुछ बालक कबड़ी खेल रहे थे और एक रैफरी का दायित्व निभा रहा था कि मयाराम बालक ने गुरुदेव को नमस्कार किया पारखी आँखों ने बालक का चेहरा देखा और पहचान गये कि यह बालक धर्म-प्रभावना करेगा। उसका नाम पूछा और कहा हम बनिया मुहल्ले में ठहरे हुए हैं, सायं समय मिले तो आना। बालक मयाराम सायं खाना खाने के बाद वहाँ पहुँच गया, प्रणाम कर बातें करने लगा, महाराज श्री जी ने नवकार मन्त्र दिया, जो पांच-दस मिन्ट में ही याद कर लिया, अगले दिन तिक्खत्तो का पाठ स्मरण कर लिया और बालक मयाराम का आना-जाना आरम्भ हो गया । इनका एक बड़ा भाई था और दो छोटे भाई थे । बालक मयाराम 16 वर्ष का था कि थोड़े अन्तराल में ही माता पिता चल बसे। बड़े भाई की शादी छोटी उमर में ही

गई थी। मयाराम आठ युवक जिसमें इनके दो छोटे भाई सुखी राम और रामनाथ, दो चाचा के लड़के जवाहर लाल और हिरदूलाल और श्री जोतराम के चाचा आशाराम के पोते और इनके इलावा केसर सिंह, नानकचन्द, देवीचन्द तथा अखेराम यह इनकी धर्म मण्डली बन गई। मयाराम की अवाज बहुत सुरीली धर्म चर्चा करते, भजन-सज्झाय गाते-ज्ञान-ध्यान के लिए साधु-सम्पर्क बढ़ता गया। वैराग्य का अंकुर पक्का होता गया। कुछ अन्तराल के बाद माता-पिता इस संसार से विदा हो गये। उन दिनों बाल-विवाह का चलन था परन्तु मयाराम ने इन्कार कर दिया जिस से इनके छोटे भाई भी अविवाहित ही थे। महाराज श्री रतीराम जी और श्री गंगाराम जी का बड़ोदा में कई चतुर्मास हुए जिससे इनके भाव बढ़ते गये और घर में भी खेती-बाड़ी का दायित्व बढ़ गया । भाभी ने भी बहुत कहा कि शादी कर लो परन्तु मयाराम नहीं माने । चार वर्ष बीते की बड़े भाई भी इस संसार को अलविदा कह गये। मयाराम ने गुरु महाराज से कईं प्रत्याख्यान लिए हुए थे जिसमें ब्रह्मचर्य भी था। घर की सारी जिम्मेदारी भी संभालनी पड़ी। उस समय जाट परिवार में व्यवस्था थी कि घर में विवाहित सदस्य की मृत्यु पर दूसरा परिवारिक सदस्य विधवा

नारी को पत्नी के रूप में अपना ले। यदि घर में कोई कुँवारा युवक हो तो समस्या सहज हो जाती थी । दबाव बड़ता गया पर वीर योद्धा अपना बचाव करता रहा। मयाराम अपने संकल्प में अडिग और अटल रहा। घर,खेत के कामों मे व्यस्त होते भी धर्म-ध्यान से पीछे नहीं हटे। जब मयाराम की उमर 23 वर्ष की हुई तो किसी काम से पटियाला आना हुआ, रात को रुकना पड़ा, पता किया यहाँ कोई जैन सन्त हैं, तपस्वी श्री नीलोपाद जी, हरनाम दास जी और श्री राम बख्श जी पुरानी गुढ़ मंड़ी मोहल्ला ठठ्ठेरिया में हैं वहाँ पहुँच कर गुरु महाराज के दर्शन किए और रात ठहरे, धर्म चर्चा हुई, मयाराम जी ने सोलह सतियों का सज्झाय गाना शुरु किया मधुर सुरीली अवाज ने आस-पास के घरों से लोग सुनने आ गये। शास्त्रीय मर्यादानुसार गायन बन्द हो गया, सुनने वाले सब प्रस्थान कर गये। गुरु जी ने कहा- हरनामिया, ये दीक्षा ले ले तो चमत्कार हो जाएगा। शिष्य ने कहा- गुरु जी आपके मन में आया है तो ऐसा ही होगा।

अगले दिन प्रवचन श्रवण किये, सब ने कोई न कोई प्रत्याख्यान किया, मयाराम ने भी प्रत्याख्यान की

याचना की, महाराज बोले करोगे प्रत्याख्यान, जी महाराज, दीक्षा लिए बगैर पटियाला नहीं छोड़ना। मयाराम ने स्पष्ट कर दिया घर वालों से इतने दिनों तक मैंने अपना फर्ज निभा दिया है अब मुझ से अपेक्षा मत करो और अन्तिम में स्वीकृति प्राप्त की।

दूसरी स्वीकृति लेनी थी प्रतिबोधक गुरुदेव श्री गंगारामजी और श्री रतीराम जी से, उनके चरणों में निवेदन भिजवाया कि आपके ज्ञानदान से समृद्ध बने श्री मयाराम जी पूज्य श्री नीलोपद एवं श्री हरनामदास जी महाराज के चरणों मे दीक्षा लेने का संकल्प कर चुके हैं। इस उच्चकार्य मे आपकी स्वीकृति आवश्य है क्योंकि आप ही इसमें धर्म का बीज बोने वाले हो। समाचार प्राप्त कर दोनों मुनियों के हर्ष की सीमा न रही और प्रसन्नता से स्वीकृति प्रदान की। माघ सुदी 6, सम्वत् 1934 को दीक्षा देकर श्री हरनामदास जी का शिष्य घोषित किया।

आचार्य श्री अमर सिंह जी के बारह शिष्य थे उनमें से चौथे श्री रामबख्श जी थे, आचार्य श्री अमरसिंह जी अमृतसर ओसवाल परिवार से थे, श्री रामबख्श जी अलवर को लोढ़ा गोत्रिय ओसवाल थे, श्री नीलोपद जी पंजाब के प्रसिद्ध नगर सुनाम के लोढ़ा परिवार से थे, श्री

हरनामदास जी भी रोपड़ के गदिया परिवार से थे, उन दिनों ओसवालों में धर्मानुराग वैराग्य की चादर ओढ़े हुए था। श्री मयाराम जी जाट परिवार से ही दीक्षा नहीं ली अपितु दीक्षा की झड़ी लगा दी। श्री मयाराम जी तो गुरु चरणों में ज्ञान अर्जित करने में निमग्न हो गये। धर्म प्रभावना में श्री मयाराम जी में नैसर्गिक गुण थे बड़ौदा गांव मे उदासी सी छा गई इनके दोनों सहोदर भाई सुखीराम और रामनाथ, दो चचेरे भाई श्री जवाहर लाल जी महाराज, श्री हिरदूलाल जी महाराज और देहबल से बाहूबली श्री केसरसिंह जी महाराज और श्री नानकचन्द जी महाराज, श्री देवीचन्द जी महाराज, श्री अखेराम जी इन आठों को श्री मयाराम जी के चरणचिन्हों पर आसक्त हो गये। श्री जवाहर लाल जी ने श्री मयाराम जी के दीक्षा महोत्सव पर ही कसम खा ली कि मुझे भी मुनि मार्ग अपनाना है और मार्ग इतना आसान नहीं था क्योंकि छोटी उमर में ही विवाह के बन्धन में बन्द चुके थे। परिवार वालों को स्पष्ट कह दिया मैं तो संयम लूँगा। घर से भाग कर श्री मयाराम जी के पास चले जाते, फिर घर वाले ले आते। घर वाले समझ गये कि श्री मयाराम ने जादू चलाया है। श्री जवाहरलाल जी को आज्ञा मिल गई और पटियाला 1935 में ही दीक्षित हो गये अब दोनों

आत्म-साधना में आगे बढ़ते गये। तीसरा चतुर्मास अमृतसर आचार्य श्री अमरसिंह जी के पास किया। आचार्य श्री आपने जीवन की संध्या में थे। वहाँ पर श्री मयाराम जी उपासना में लीन रहे। आचार्य जी ने उस बालसूर्य की आभाओं को गौर से देखा और विशवस्त हो गये कि पंजाब का गौरव इस मुनि के हाथों में सुरश्रित रहेगा। बड़ोदा से तीन युवक श्री केसरीसिंह जी, श्रीनानक चन्द जी और श्री देवीचन्द जी श्री मयाराम जी और हिरदूलाला जी गांव से अमृतसर आने के लिए उचाना स्टेशन से गाड़ी पकड़नी थी कि हिरदूलाल को याद आया कि बैलों को बिना बांधे छोड़ आया हूँ, कहा- तुम चलो मैं अभी थोड़ी देर बैल बांध कर आता हूँ, साथियों ने बहुत समझाया कि अब घर कि चिन्ता मत कर परन्तु घर में गया और 17 साल गृहस्थ में फंस गया और तीन उनके पास दीक्षा लेने के लिए उपस्थित हुए। आचार्य श्री जी से निवेदन किया कि हमें श्री मयाराम जी के शिष्यत्व स्वीकार करने के लिए दीक्षा दो। समाज ने विरोध किया कि तीन वर्ष की लघु दीक्षा के आगे दीक्षा कैसे दी जा सकती है। आचार्य श्री ने आज्ञा प्रदान कर दी और श्री मयाराम जी से कहा- मुनि जी ! मेरी जीवन

ज्योति अधिक देर तक नहीं रहने वाली, मेरे बारह शिष्यों मे श्री खूबचन्द महाराज ने बहुत सेवा की है और अब कुछ बुढ़ापे की ओर बड़ रहें हैं, उनको भी कोई योग्य शिष्य मिल जाए, श्री मयाराम जी महाराज ने तत्काल कहा की तीनों उनके शिष्य बना दिए जाएं परन्तु आचार्य श्री जी ने कहा- नहीं एक ही उनका और दो तुम्हारे शिष्य होंगे। श्री केसरा सिंह जी को श्री खूबचन्द जी महाराज का शिष्य आचार्य श्री जी ने दीक्षा पाठ पढ़ाया सब ने महाराज श्री रामबख्श जी से चार वर्ष तक ज्ञान अर्जित किया। श्री मयाराम जी महाराज ने सूर्य प्रज्ञप्ति और चन्द्र प्रज्ञप्ति को छोड़ शेष तीस आगम कण्ठस्थ कर लिए। उनके देवलोक के पश्चात अन्यान्य अधिकारियों से ज्ञान अर्जित एवं वृद्धि करते रहे। श्री नीलोपद जी महाराज के प्रति उनका समर्पण का कोई जवाब नहीं। एक बार श्री मयराम जी महाराज विचरते हुए दानौदा पहुँचे और वहाँ पर श्री गंगाराम जी महाराज और श्री रती राम जी महाराज पहले ही विराजमान थे । इनको अलग ठहराया गया क्योंकि उनके साथ पंजाब सम्प्रदाय की समाचारी भिन्न होने के कारण वन्दना विहार भी नहीं था। परन्तु अपने ज्ञानदाता के प्रति कृतज्ञता कैसे भूल सकते हैं, जब उन्हें पता चला कि गुरु महाराज यहाँ

विराजमान है, तो अपनी मर्यादाओं को विचार में रखते हुए, स्वयं उनसे मिलने गये और उनके चरणों मे सिर रख दिया, पावन दीक्षा के पश्चात प्रथम बार दर्शन हुए थे, यह देखकर मुनि श्री गंगाराम जी और श्री रतीराम जी महाराज भी गदगद हो गये। और एक दशवैकालिक का लिखित गुटका उनसे उपहार रूप स्वीकार किया। गुरुवर ने कहा- मयाराम तेरे चिन्तन-धरातल की ऊँचाई को कोई नाप नहीं सकता। श्री मयाराम जी अपने ज्ञानदाता की कृतज्ञता व्यक्त कर अपने मूल स्थान पर आ गये। उत्तर भारत की सीमाओं से बाहर निकल कर धर्म प्रभावना का लक्ष्य लेकर दूर-दूर तक विचरण किया । राजस्थान में हुक्मी गच्छ के आचार्य श्री उदय सागर जी के विशेष निमन्त्रण पर उनके साथ रतलाम में चातर्मास किया और आचार्य श्री जी ने अपना वैरागी छोटेलाल को उपहार रूप में भेंट किया। आचार्य श्री उदय सागर जी के देवलोक गमन पर आचार्य श्री चौथमल जी का श्री जवाहरलाल जी महाराज के साथ कुछ मत भेद उजागर हो गये, जिसे आचार्य श्री चौथमल जी समाप्त करना चाहते थे, कि कोई बीच में आकर इसको निपटा दे, उस समय श्री मयाराम जी उधर विचरण कर रहे थे, आचार्य श्री चौथमल जी ने श्री मयाराम जी को उपयुक्त समझ

कर निमन्त्रण दिया, श्री मयाराम जी महाराज आप तो नहीं आए, परन्तु अपना शिष्य श्री नानक चन्द जी महाराज को इस काम के लिए भेजा। महाराज श्री नानकचन्द जी ने अलग-अलग भेंट कर विवाद को समाप्त करवा दिया।

परम श्रद्धेय श्री मयाराम जी महाराज मेवाड़ की धरती पर ही विचरण कर रहे थे, कि राजस्थानी श्री अमरसिंह जी महाराज सम्प्रदाय के शिष्य महामुनि श्री पूनम चन्द जी महाराज के शिष्य श्री नेमीचन्द जी महाराज (पूर्वज गुरु आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी एवं उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के) भी उसी धरा पर विचरण कर रहे थे। अधिकांश प्रान्त उनके मुनिसंघ से प्रभावित था। वहाँ दोनों संघों का प्रेमपूर्वक मिलन हुआ। प्रेम से मिलन इतना प्रगाढ़ हुआ कि श्री नेमी चन्द जी महाराज के शिष्य श्री वृद्धि चन्द जी महाराज (पूज्य गुरुदेव पंजाब केसरी स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज) जिनकी दीक्षा कुछ समय पूर्व ही हुई थी ने परम श्रद्धेय श्री मयाराम जी के संयमी जीवन से इतने प्रभावित हुए कि उनका मन मचल गया और विचार बना कि यदि मुझे भी इनके चरणों में रहने का मौका

मिल जाए तो मेरे पाँच महाव्रत सफल हो जाए। उन्हें अपने जीवन की सम्पूर्णता और समग्रता श्री मयाराम जी महाराज के सानिध्य में नजर आने लगी। परन्तु यह भावना कैसे पूर्ण हो, एक जटिल समस्या थी। एक दिन साहस करके अपने गुरदेव श्री नेमीचन्द जी महाराज के चरणों में विनती कि की श्री मयाराम जी महाराज के प्रवचन जीवन और संयम इतना भा उठा कि उनके चरणों में रहने का मन करता है यदि आप की अन्तरआत्मा को खेद न हो तो मुझे उनके चरणों में रहने की आज्ञा प्रदान करें। मैं यह मानता हूं कि आप मेरे गुरुदाता दीक्षा प्रदाता हैं और मेरे बड़े भाई भी हो, संसार से निकालने वाले नायक भी हो परन्तु मेरा मन पूर्णतः श्री मयाराम जी को समर्पित हो चुका है। श्री नेमीचन्द जी महाराज श्री वृद्धिचन्द की बात सुनकर चकित रह गये। यह मुनि घर के राग से मुक्त होकर अब सम्प्रदाय राग से भी मुक्त होना चाहता है। यदि इसके मन में इतनी वीतरागता है तो मैं बाधा नहीं बनूंगा और सहर्ष आज्ञा दे दी और इनके भाई कंवरसैन ने भी श्री वृद्धिचन्द जी महाराज का शिष्यत्व प्राप्त किया।

श्री मयाराम जी के मुनिराज जब जब उदयपुर या राजस्थान में पधारे तब तक उन्हें वहीं सम्मान मिला जो श्री मयाराम जी महाराज के लिए सुरक्षित था। इस मुनि संघ को समीपवर्ती क्षेत्र से कईं मुनिराज प्राप्त हुए। श्री मयाराम जी महाराज के मूर्धन्य शिष्य श्री छोटेलाल जी महाराज तथा श्री वृद्धिचन्द जी महाराज सन् 1904(सं 1847) में जब उदयपुर में चतुर्मासार्थ पधारे तो उनके चरणों में पाँच भव्यात्माओं ने दीक्षा ग्रहण की थी। मेवाड़ की स्थानीय मुनि परम्पराओ में दीक्षित होने की बजाय पंजाब सम्प्रदाय में दीक्षित हुए।

इस प्रसंग को पंजाब केसरी स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज प्रस्तुत करते है कि उदयपुर चातुर्मास में श्री मयाराम जी महाराज रात को रामायण सुनाया करते थे (केसराज कृत रामायण) पंचयती नौहरा में 10-20 हजार की हाजरी होती थी। कंठ तर्ज भावुकता तथा सरसता के कारण महिलाओं के साथ कुछ वेशायाएं भी रामायण सूनने आती थी। कईं दिन तक सुनती रहीं. एक दिन सीता जी के शील के परीक्षा प्रसंग आया तब श्री मयाराम जी महाराज ने अग्निकुंड को जलकुंड बनने का जो मनोरम चित्र खींचा, उससे सैंकड़ों व्यक्तियों ने

ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया और दो वेश्यों ने भी भरी सभा में अजीवन ब्रह्मचर्य का नियम लिया। उनकी आयु लम्बी रही और उन्होंने पूर्ण शुद्धि के साथ व्रत निभाया।

(प्रेमसुधा भाग 5, प्रष्ट 12)

प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी महाराज द्वारा लिखित आचार्य अमरसिंह जी महाराज के जीवन चरित्र में इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि-

पूज्य श्री मयाराम जी महाराज उदयपुर चातुर्मास में विराजमान थे प्रतिक्रमण के पश्चात एक श्रावक आया और कहने लगा- अन्नदाता आज तो कोई श्रावक श्रोता नहीं आएगा, क्योंकि पास में ही अमूक सेठ के यहाँ वेश्याओं की नृत्य संगीत है। महाराज श्री जी ने पूछा- तुम तो नहीं वहाँ जाओगे? श्रावक ने कहा नहीं मैं तो नहीं जाऊँगा, यहीं रहूँगा। श्री मयाराम जी महाराज ने उच्च स्वर से संगीत प्रारंभ कर दिया, उस संगीत से खींचकर सब श्रोता तथा वेशयाएं भी उनके प्रवचन में उपस्थित हो गई, जिससे उनका जीवन ही बदल गया।

आचार्य श्री सोहनलाला जी महाराज बड़े संयमी और दृढ़ संकल्प के धनी थे। अपने निर्णयों पर अडिग पर श्री मयाराम जी महाराज के लिए असीम आदर और श्रद्धा का भाव संजोए हुए थे। अभी आचार्य पद पर आरूढ़ हुए उन्हें दो वर्ष ही हुए थे, कि चातुर्मास कांधला (उत्तर प्रदेश) में चल रहा था तथा श्री मयाराम जी महाराज का बामनौली में, दोनों क्षेत्रों की दूरी लगभग 20 मील की थी परन्तु भावनात्मक दृष्टि से गहरी निकटता थी। उस समय आचार्य श्री जी के चरणों मे पसरूर निवासी दृढ़ निश्चयी युवक श्री कांशी राम जी और श्री नरपत राय जी वैराग्याभ्यास कर रहे थे, श्री कांशी राम जी को बड़े संघर्षों से परिवार वालों ने आज्ञा प्रदान की थी। परिवार वालों ने पूरे पंजाब मुनि मंडल पर दबाव बनाया हुआ था कि इसको दीक्षा नहीं देनी। मेरे पितामह (दादा श्री जी) मास्टर किशनचन्द जी पसरूर मे उस समय अध्यापक कार्यरत थे, कि बालक कांशीराम को आज्ञा न मिलने पर वह उपर छत पर चढ़ गये और कहने लगे आज्ञा दो नहीं तो छलांग लगा दूँगा, परिवार वालों ने वेहड़े में सारे बिस्तर रजाईया तलाईया बिछा दी और मास्टर किशनचन्द जी को बुलाया गया कि इसको समझाओ, मास्टर किशनचन्द जी ने कहा जब

कांशीराम के प्रणाम इतने दृढ़ है तो आज्ञा दो, जिससे आज्ञा प्रदान की गई और मास्टर किशनचन्द जी सह परिवार (मेरे पिता जी पूज्य श्री हरी चन्द जी के साथ) कांधला दीक्षा पर पहुँचे। आचार्य श्री जी ने चतुर्मास के पश्चात श्री मयाराम जी को विशेष बुलाया और कहा दीक्षा का पाठ तुम पढ़ाओ। श्री मयाराम जी महाराज बामनौली से चातुर्मास समाप्ती पर कांधला पहुँच गये। मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी को दीक्षा का शुभ महूर्त था, उत्सव सहित सभी कार्य सम्पन्न हुए, जब दीक्षार्थी साधु वेष में दीक्षा के लिए उपस्थित हुए, तो आचार्य श्री जी ने अपने अजीब अन्दाज में श्री मयाराम जी को कहा कि दीक्षा पाठ तुम पढ़ाओ। श्री मयाराम जी महाराज ने कहा आप चतुर्विध संघ के आचार्य हैं और दीक्षा पर्याय में भी मुझ से बड़े हैं, यह आप का ही अधिकार है। आचार्य श्री जी ने कहा, मैं इस लिए आप से पाठ पढ़ाना चाहता हूँ कि जिस दृढ़ता से दीक्षार्थी घर से निकले हैं, वही दृढ़ता ताउमर इन में बनी रहे, आप जैसे संयमी महापुरुष इनके हृदय में कर सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप जैसां संयम इनमें प्रकट हो। आचार्य श्री के आदेशानुसार पाठ श्री मयाराम जी ने पढ़ाया और जीवन भर उतकृष्ट संयम पालन किया।

श्री मयाराम जी के नेश्राय में रहने वाले मुनियों ने संयम मर्यादाओं एवं साधना का पूर्णतः पालन किया।

श्री मयाराम जी महाराज किसी प्रकार के चमत्कार में विश्वास नहीं रखते थे परन्तु चमत्कार हो जाते थे। पंजाब केसरी स्वामी प्रेमचन्द जी के प्रवचन संग्रह प्रेम सुधा में पढ़ा था कि श्री मयाराम जी महामन्त्र नवकार को ही विशेष मन्त्र मानते थे। एक घटना का वर्णन करते हुए कहा कि महाराज श्री मयाराम जी अपनी शिष्य मंडली के साथ विहार कर रहे थे, कि रास्ते में एक छोटा सा मुस्लिम गाँव आया जिसमें बहुत अफरा-तफरी मची हुई थी, महाराज श्री जी ने एक युवक से जानना चाहा कि ऐसा क्या हो गया है। युवक बोला- बाबा जी गांव के एक युवक को दो दिन पहले साँप ने डस लिया था, वह अभी तक बेहोश है कई सपेरे, टोने-टोटके वाले आए परन्तु कोई अराम की संभावना नहीं। महाराज श्री जी ने कहा- मैं देख सकता हूँ, क्यों नहीं चले मैं आपको ले चलता हूँ। महाराज श्री जी पधारे उन्होंने देखा कि युवक बिल्कुल कुशल पूर्वक है, महाराज श्री जी ने कहा युवक अभी ठीक हो जाएगा मेरी बात मानोगे, सब ने एक स्वर से कहा जी हाँ, महाराज श्री जी

ने अपना ओघा उस युवक पर फेरा और नवकार मन्त्र का उच्चारण किया कि युवक ने आँखें खोल ली, गाँव मे खुशी की सीमा न रही, महाराज श्री जी ने वहीं पर 108 बार नवकार मन्त्र का उच्चारण करवाया, युवक बैठ गया। महाराज श्री जी ने कहा कि किसी भी जीव को मारना नहीं और यह मन्त्र पढ़ते रहना, वहाँ एक उनका रिशतेदार आया हुआ था जो धागे-तवीज करता था, उसने यह मन्त्र ग्रहण कर लिया। अब वह इस मन्त्र से उपचार करने लगा और लोगों कि श्रद्धा जम गई। फिर कभी महाराज विचरते हुए उसी के गाँव के पास से निकले और वह दौड़कर आया महाराज श्री जी के चरण-स्पर्श किये और कहने लगा, गुरु जी इस मन्त्र पर बहुत श्रद्धा है लेकिन जब कोई जैन मेरे पास आता है तो मैं उसे यह मन्त्र देता हूँ तो वह कहता है यह तो हम रोज़ करते है कोई और बढ़िया मन्त्र दो। महाराज श्री जी ने कहा, बात विश्वास और श्रद्धा की है, जिसने श्रद्धा कि उसको फल मिलेगा।

दूसरा उदाहरण उन्हों ने आचार्य श्री चौथमल जी का दिया हुआ था, कि आचार्य श्री जी विहार कर रहे थे कि एक भयानक जंगल रास्ते में पड़ता था और एक नदी थी

जिसका पुल बहुत संकरा था और उधर से एक ट्रक आ रहा था कि पुल पर एक कुत्ता ट्रक के नीचे आ गया, ट्रक गुजर गया जब महाराज श्री जी ने पुल पर देखा कि इस का जीवन पल दो पल का ही है, महामन्त्र नवकार सुनाया कि उसके प्राण-पखेरू उड़ गये, महाराज श्री जी के साथ कुछ सधर्मी भाई विहार कर रहे थे, महाराज श्री जी ने कहा कि इसको कपड़े में लपेटकर मिट्टी में दबा दो और आप आगे बड़ गये। श्रावकों ने ऐसा ही किया और महाराज श्री जी ने गलत पगडंडी पकड़ ली, आगे खतरनाक बीहड़ था, कि महाराज श्री जी को एक सफेद वस्त्रधारी सामने मिला वन्दना कि और कहने लगा महाराज यह रास्ता भयानक है, महाराज श्री जी आप कौन- महाराज मैं वही श्वान हूँ जिसे आप ने महामन्त्र नवकार का शरणा दिया था, मैं प्रथम देवलोक में गया और आपके दर्शन करने के भाव से आप के दर्शन हुए, महाराज श्री जी ने कहा वहाँ पर भी समय्कत्व में रहना और मंगलपाठ सुनाया और उस ने सही रास्ता बतलाया।

एक अन्य घटना इस प्रकार है कि कुछ बड़े मुनिराज कहीं विचरण कर रहे थे कि एक मोरनी जोर जोर से क्रन्दन कर रही थी, सामान्य केकाख और क्रन्दन

ध्वनि का अन्तर मुनि महाराज जानते थे उन्हें लगा कि मोरनी किसी विपदा में है बचाव के लिए विलाप कर रही है, मुनिराज असमंजस में रूक गये कि क्या करें, तभी एक घुडसवार आ निकला, मुनिराज ने रोका और कहा कि पता करो कि क्या बात है मोरनी क्यों संकट में है। घुड़सवार नीचे उतरा और दूर जाकर देखा कि एक बिल्ली मोरनी के बच्चों पर घात लगाने वाली थी जिससे मोरनी अपने बच्चो के बचाव के लिए क्रन्दन कर रही थी, उस ने बिल्ली को भगा दिया और मोरनी का क्रन्दन बन्द हो गया। वहाँ जनता इकट्ठी हो गई और कहने लगी महाराज यह उदयपुर के महाराणा फतेह सिंह था।

पूज्य महाराज श्री जी एवं उनका मुनिसंघ रावलपिण्डी से चला, रास्ता भीषण था घना जंगल और कुछ श्रावक भी साथ थे कि रास्ते में श्री मनोहरलाल जी महाराज के पेट में भयावह दर्द उठा, आगे बड़ने की हिम्मत नहीं रही थी और साथ में बुखार भी हो गया, गुरुदेव ने तीन सन्तों केसरासिंह जी को आदेश दिया कि तुम विहार करो हम तीन यहां ही रूकते हैं, गुरुदेव तथा रुग्ण संत श्री मनोहर लाल जी और कुछ श्रावकों के रहने के लिए कोई स्थान नहीं था रात एक वृक्ष के नीचे ही

रूकना ठीक समझा। आस-पास कहीं शेर की दहाड़ सुनाई दी, श्रावकों ने बचाव के लिए लाठी पत्थर उठाए परन्तु श्री मयाराम जी ने रोक दिया, शांत रहो, नहीं तो नुकसान अधिक हो सकता है। सब शांत रहे कोई अप्रिय घटना नहीं घटी, सब सो गये केवल मयाराम जी महाराज ही जाग रहे थे कि आधी रात को सिंह आया लगभग 50 गज की दूरी पर खड़ा होकर ध्यानस्थ मुनि श्री मयाराम जी को देर तक निहारता रहा, दहाड़ लगाई कि सब जाग गए, गुरु आज्ञानुसार सब जाप करने लगे, सिंह वहीं बैठ गया, निहारता रहा और प्रदक्षिणा कर चल दिया। अगले दिन जब अग्रिम मुनियों के साथ मिले तो श्रावकों ने सब को बताया।

एक बार कुछ वकील महाराज श्री जी से कहने लगे कि देवी-देवताओं की बातें बहुत सुनते हैं परन्तु प्रत्यक्ष कभी कुछ नहीं हुआ। आप कृपा करें । उस समय तो महाराज मौन रहे। एक दिन कुछ वकीलों का दल प्रवचन सुनने अगली पंक्ति में बैठ गये, प्रवचन चल रहा था कि सभी वकील भयभीत हो गये और सभा छोड़कर भाग गए। किसी ने रोका भी नहीं प्रवचन शांत भाव से चलता रहा, जब प्रवचन सभा समाप्त हुई, सभी वकील

आए और कहने लगे आप के पाट के नीचे लंबा चौड़ा शेर घूर रहा था, आपकी देवमाया को हम सह नहीं सके, इसलिए हमें भागना पड़ा। वह सब अनन्य भक्त बन गये। ऐसी अनेकों घटनाएं आपके जीवन में मिलती है, जिनका कोई लिखित प्रमाण सुरक्षित नहीं मिलता।

आप श्री जी का अन्तिम चातुर्मास भिवानी में था भादवा सुदी दसवीं को शरीर में सुस्ती छा गई फिर एकादसी की प्रभात आई आहार आदि नहीं किया, समस्त जीवों से क्षमायाचना करते संतारा ग्रहण किया सायं सात बजकर 18 मिन्ट में आत्मा देह-त्याग कर चली गई। इनकी परम्परा में लगभग 60 से अधिक मुनि इस समय महावीर वाणी का प्रचार कर रहें हैं। अभी उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक प्रज्ञामहार्षि श्री सुमन मुनि जी के देवलोक पधारने पर इनके परिवार के मुनि सुभद्र मुनि जी महाराज श्रमण परम्परा में सम्मिलित हो कर उत्तऱ भारतीय प्रवर्त्तक पद पर आसीन हुए हैं ।

।। णमो लोए सव्वसाहणं ।।

स्वतन्त्र जैन जलन्धर-9855285970